आधी आबादी

हर सन्डे वूमेन्स डे

संस्करण – रविवार, 11 जून 2023, अंक – 05

विशेष संपादकीय

अपना ख़्याल रखना!

– चारुल मल्लिक

इन दिनों रील देखने में जिस तरह से हमारी युवा पीढ़ी लगी हुई है यह व्यापक स्तर पर एक निराशाजनक बात है। आज भारत की गिनती सबसे ज्यादा युवा वाले देशों में होती है। हमारे यहाँ कुल आबादी का 65 प्रतिशत हिस्सा 35 साल की उम्र से कम है। मतलब यह कि हर क्षेत्र में इतिहास रचने के लिए अपार संभावनाएँ। लेकिन, अगर यह युवा सोशल मीडिया पर उलझ जायेंगे तो ये टेश की तरक्की में कैसे अपना योगदान दे सकेंगे? यह एक गंभीर मसला है जिसे हम सबको सुलझाना है। कभी-कभी तो यही लगता है कि अमेरिका भारत की इस शक्ति को बहुत पहले पहचान गया था इसलिए उसने फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाट्सप्प जैसे माध्यम बनाए ताकि नादान भारतीय इसकए चंगुल में फँस कर अपने समय का नुकसान करते रहे? हो सकता है कि यह मेरी कोरी कल्पना भर हो? लेकिन, यह तो हम देख ही पा रहे हैं कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स हमारे युवाओं का बहुत सारा समय खराब कर रही है। यह शुभ संकेत नहीं।

आज वाइरल होते रील देखने की लत मानसिक रूप से हमारे सोचने-समझने की शक्ति पर भी असर कर रही है। यह हमें शारीरिक रूप से भी नुकसान कर रही है। इस पर गंभीरता से विचार करना होगा। मैं जिन युवाओं की तरफ इशारा कर रही हूँ इनमें स्त्री-पुरुषों की बराबर की भागीदारी है। कोविड के बाद बच्चों के हाथों में भी स्मार्ट फोन पहुँच गए हैं। अब तो रील बनाने में ये बच्चे भी बड़ों को टक्कर दे रहे हैं। यह एक घातक स्तिथि है। हमें एक ठोस और कारगर उपाय अपनाकर इस लत से बचना होगा। एक स्वस्थ रूटीन का अगर आप पालन करते हैं तो अपने आप ही आपको स्मार्ट फोन इस्तेमाल करने का ज्यादा समय नहीं मिलेगा। इसलिए जितना हो सके स्मार्ट फोन की लत से दूर रहें। सुबह सोकर जगने के बाद काफी लोग सबसे पहले अपना फोन उठाते हैं। दुनिया भर के अपडेट देखते हैं। इस आदत को बदलिए। सुबह कम से कम आधे घंटे कसरत और मेडिटेशन के बाद कुछ समय पढ़ने में लगाइए। इस आदत को अपनाकर देखें, आप खुद ही बड़ा अंतर महसूस करेंगे। मैं इस लेख के माध्यम से आप सबसे आग्रह करती हूँ कि सोशल मीडिया के मकड़जाल से खुद को मुक्त कीजिए। नहीं तो ये समझ लीजिए कि जाने-अनजाने आप अपना ही नहीं परिवार, समाज और बड़े स्तर पर देश का भी नुकसान कर रहे हैं।

गुजरात में एटीएस ने महिला समेत पांच संदिग्ध आतंकी को धर दबोचा !

गुजरात के पोरबंदर में एटीएस यानि एंटी टेरर स्क्वाड ने बड़ी कार्रवाई की है। उन्होंने पोरबंदर में ISKP के एक सीक्रेट मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया है। उन्होंने संगठन से जुड़े पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। जिसमें 3 कश्मीरी युवक उबैद नासिर मीर, हनान हयात शाल, मोहम्मद हाजिम शाह और 2 सूरत निवासी जुबैर अहमद मुंशी और एक महिला सुमेरा बानू भी शामिल है।

बताया गया कि कश्मीर के तीनों निवासी अपने हैंडलर अबू हमजा की मदद से इस्लामिक स्टेट ऑफ खोरसान प्रांत (ISKP) में शामिल होने के लिए समुद्र के रास्ते फरार हुए थे। इनके पास से इस्लामिक स्टेट ऑफ खोरसान प्रोविंस की सामग्री और चाकू जैसे धारदार हथियार भी बरामद हुए हैं। बीते कई दिनों से एटीएस की टीम लगातार आतंकी संगठन से जुड़े लोगों को गिरफ्तार करने के लिए छापेमारी कर रही है। एटीएस ने सभी आरोपियों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है और उनसे कड़ी पूछताछ की जा रही है। हालांकि,

■ हीरेंद्र झा

अभी भी भारी गोपनीयता के बीच ऑपरेशन चल रहा है। पकड़े गए सभी आरोपी अफगानिस्तान में सक्रिय आतंकी संगठन आईएसकेपी के सदस्य हैं और यह पिछले एक साल से एक-दूसरे के संपर्क में थे।

जानकारी के मुताबिक यह सभी आरोपी पोरबंदर से अफगानिस्तान भागने की फिराक में थे। इस अभियान को अंजाम देने के लिए इसकी अगुवाई डीआईजी दीपन भद्रन और एसपी सुनील जोशी कर रहे हैं। वह शुक्रवार से ही स्थानीय पुलिस अधिकारियों के साथ पोरबंदर में डेरा डाले हुए थे। अभियान में एटीएस की कुल चार टीमें लगातार एक्टिव होकर छापेमारी कर रही थीं। दो टीमों को पोरबंदर दरिया में लगाया हुआ था, वहीं अन्य दो टीम द्वारका इलाके में और एक अन्य टीम पोरबंदर में छापेमारी कर रही थीं। इसके अलावा एटीएस की टीम ने गुजरात के भरूच सूरत और दिल्ली में भी अलग-अलग जगहों पर पड़ताल की है।

सूरत से आतंकी संगठन आईएसकेपी से जुड़ी एक महिला को भी गिरफ्तार किया गया है। महिला को एटीएस ने क्राइम ब्रांच पुलिस की मदद पकड़ा गया था। सुमेरा नाम की एक महिला को शहर के लालगेट इलाके से हिरासत में लिया गया और पोरबंदर ले जाया गया और उसके कबूलनामे के आधार पर पोरबंदर से तीन और लोगों को हिरासत में लिया गया है। सुमेरा अपने पिता से मिलने कन्याकुमारी से सूरत आई। एटीएस द्वारा हिरासत में ली गई महिला की शादी दक्षिणी भारतीय राज्य तमिलनाडु में हुई थी। महिला के पास से चार मोबाइल फोन बरामद हुए हैं।

महिला ईरान के रास्ते अफगानिस्तान जाने की योजना बना रही थी। प्रतिबंधित संगठन इस्लामिक स्टेट ऑफ खोरसान प्रोविंस अफगानिस्तान, पाकिस्तान और ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान में सक्रिय है। फिलहाल एटीएस के ऑपरेशन की कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है।

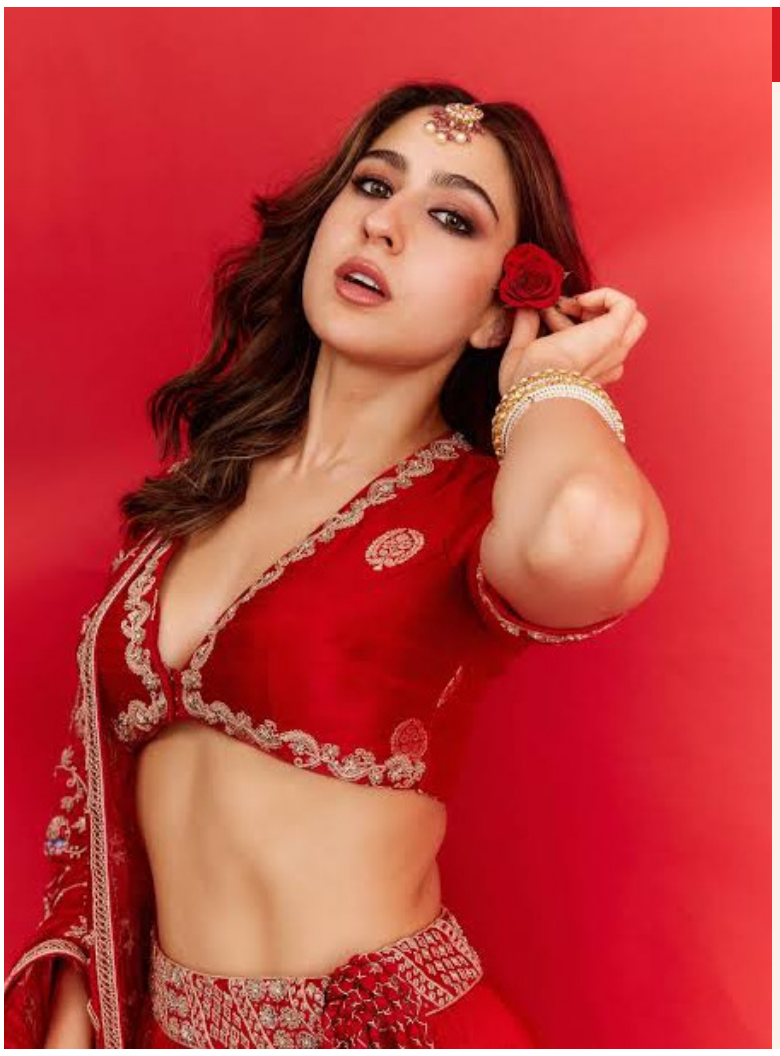

इंटरव्यू

बॉलीवुड अभिनेत्री सारा अली ख़ान इन दिनों अपनी फिल्म 'जरा हटके जरा बचके' की सफतला को एन्जॉय कर रही हैं। सारा अपनी प्रोफेशनल लाइफ के साथ साथ पर्सनल लाइफ को लेकर भी सुर्खियों में रहती हैं। हाल ही में उन्होंने आधी आबादी के संपादक हीरेन्द्र झा से बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के अंश-

सवाल - आजकल चुनिंदा फिल्में ही बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन कर पा रही हैं। क्या आपको लगता है कि अब दर्शकों की फिल्मों से उम्मीदें ज्यादा बढ़ गई हैं?

सारा - मैं ये सब नहीं समझती हूं और समझना भी नहीं चाहती हूं। मेरा काम है अपने निर्देशकों से सीखना और उनके मुताबिक काम करना। आगे बॉक्स ऑफिस पर कौन सी फिल्म चलेगी और कौन सी नहीं, यह किसी को भी नहीं पता।

सवाल - आप अक्सर अलग-अलग मंदिर जाती रहती हैं। कभी केदारनाथ तो कभी महाकाल। इसके लिए आपको ट्रोल भी किया जाता है। इस सबसे कैसे निपटती हैं आप?

सारा - मैं ये समझ चुकी हूं कि किस बारे में लोगों की राय सुननी चाहिए और किस बारे में नहीं सुननी चाहिए। अगर मेरे काम को लेकर दर्शकों को कुछ समस्या है, तो वह मेरे लिए भी एक प्रॉब्लम हो सकती है, क्योंकि मैं अपने चाहनेवालों के लिए ही ऐक्टिंग करती हूं। लेकिन अगर किसी को मेरी किसी निजी चीज या मेरी जीवनशैली से कुछ समस्या है, तो मेरे लिए वह मायने नहीं रखता है।

सवाल - शादी के बाद ज़्यादातर हीरोइनों का करियर लगभग समाप्त हो जाता है। लेकिन, आलिया से लेकर कियारा तक ये ट्रेंड बदलती दिख रही हैं। आपकी राय।

सारा - मुझे लगता है कि जब सही समय आएगा, तो मैं भी ऐसा कर पाऊं। जो ऐक्ट्रेस ऐसा कर पा रही हैं, मैं उनकी सराहना करती हूं। यह बहुत अच्छी बात है। ऐसा ही होना चाहिए कि हीरोइनों को शादी के बाद ऐक्टिंग का मौका मिलना चाहिए।

सवाल - ऐसी चर्चा है कि आप भी अपनी दादी की तरह एक क्रिकेटर से शादी कर सकती हैं?

सारा - मेरे लिए प्रोफेशन कोई मायने नहीं रखता। मेरा पार्टनर ऐसा होना चाहिए जिससे मेरी सोच मेंटल और इंटिलेक्चुअल दोनों लेवल पर मैच करती हो।

सवाल - क्या भारतीय क्रिकेट टीम के किसी खिलाड़ी को डेट कर रही हैं आप?

सारा - (हँसते हुए) मुझे अभी तक ऐसा कोई नहीं मिला जिसके साथ डेट कर सकूँ। मुझे ऐसा पार्टनर चाहिए जो 'जरा हट के' और 'जर बच के' हो।

हलचल

सादगी से सम्पन्न हुई निर्मला सीतारमण की बेटी की शादी, राजनीतिक मेहमानों को बुलावा नहीं

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की बेटी परकला वांगमयी की गुरुवार को शादी हो गई है। वित्त मंत्री की बेटी की शादी बेंगलुरु स्थित घर से ही हुई है। एक सादा समारोह में यह शादी पूरी हुई है। इस शादी में परिवार के लोग और दोस्त शामिल हुए थे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, परकला वांगमयी और प्रतीक की इस शादी में किसी राजनीतिक मेहमान को इनवाइट नहीं किया गया था। निर्मला सीतारमण की बेटी की शादी ब्राह्मण परंपरा के अनुसार हुई है। इस शादी में उडुपी अदमारू मठ के संत उपस्थित थे। वित्त मंत्री की बेटी परकला वांगमयी पेशे से एक जर्नलिस्ट हैं। वांगमयी ने मैसाचुसेट्स के बोस्टन में स्थित नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी से जर्नलिज्म में मास्टर ऑफ साइंस की पढ़ाई की है। इसके अलावा उन्होंने दिल्ली विश्वाविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में बीएम और एमए किया है।

रजामंदी से की शादी तो नहीं बनता दुष्कर्म का मामला: इलाहाबाद हाईकोर्ट

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि जब पार्टियों ने आपसी रजामंद से शादी कर ली है तो दुष्कर्म का मामला नहीं बनता है। गौरतलब है कि याचिका के खिलाफ बरेली के बारादरी थाने में 2016 में दुष्कर्म सहित पॉस्को एक्ट में प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी। याचिका ने प्राथमिकी सहित सत्र न्यायालय में चल रही पूरी आपराधिक कार्रवाई को हाईकोर्ट में चुनौती दी। याचिका की ओर से कहा गया कि उसने पीड़िता की रजामंदी से उसके साथ शादी की है। उसने कोई जोर जबरदस्ती नहीं की है। पीड़िता ने अपने बयान में यह बात स्वीकार की है। रिकॉर्ड पर दुष्कर्म से जुड़ा कोई ऐसा प्रमाण नहीं है। पीड़िता की उम्र 18 साल से अधिक हो चुकी है। कोर्ट ने पाया कि पीड़िता की उम्र 18 साल से अधिक है। लिहाजा, याचिका के खिलाफ पॉस्को का मामला नहीं बन रहा है। कोर्ट ने पहले पॉस्को एक्ट की धारा को रद्द कर दिया।

फीफा रैंकिंग : भारतीय महिला फुटबॉल टीम 60वें स्थान पर

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फुटबॉल एसोसिएशन (फीफा) द्वारा शुक्रवार को महिला फुटबॉल की जारी ताजा रैंकिंग में भारत 60वें स्थान पर है। भारतीय टीम को एक स्थान का फायदा हुआ है। वहीं, शीर्ष पांच स्थानों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। तीन महीने के बाद अद्यतन रैंकिंग के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका पहले, जर्मनी दूसरे, स्वीडन तीसरे, इंग्लैंड चौथे और फ्रांस रैंकिंग में पांचवें स्थान पर है। पिछले तीन महीने की अवधि के दौरान कुल 101 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले गए क्योंकि टीमें ऑस्ट्रेलियाई और न्यूजीलैंड में आगामी फीफा महिला विश्व कप की तैयारी कर रही हैं, जो 20 जुलाई से शुरू होनी है। अप्रैल में यूरोपीय दौरे के दौरान टीम के स्विट्जरलैंड के साथ 0-0 से बराबरी करने और स्पेन से 3-0 से हारने के बाद चीन 13वें से 14वें स्थान पर आ गया।

स्मृति ईरानी की सुरक्षा में बड़ी चूक, आत्महत्या की हुई कोशिश

केंद्रीय मंत्री और रायबरेली से सांसद स्मृति ईरानी की सुरक्षा बड़ी चूक हुई है। स्मृति ईरानी शुक्रवार को एक दिवसीय दौरे पर लोकसभा के सलोन विधानसभा क्षेत्र के छतोह ब्लाक के बेढ़ौना गांव पहुंची। जहां लोगो की समस्याओ को एक-एक कर सुना और निस्तारित करने के लिए सम्बंधित अधिकारियो को निर्देशित किया। इसके बाद उनका काफिला कुंवर मऊ के लिए निकला ही था कि वही कार्यक्रम स्थल से पहले ही नौकरी से निष्कासित प्रयागराज निवासी धीरेन्द्र कुमार केन्द्रीय मंत्री के गाड़ी के सामने कूद कर आत्महत्या का प्रयास किया। केन्द्रीय मंत्री गाड़ी से उतर कर पीड़ित की समस्या को सुनकर कोई अनहोनी न हो इसके लिए पुलिस से युवक का मेडिकल कराने का निर्देश दिया।

भारत सरकार की इस योजना से बचेगी चार लाख जानें, डब्लूएचओ भी मुरीद

केंद्र सरकार की एक योजना से 4 लाख लोगों की जान बच सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी इस योजना की तारीफ की है। रिपोर्ट के मुताबिक जल जीवन मिशन के तहत अगर ग्रामीण इलाकों में नल का जल उप्लब्ध कराया जाता है तो डायरिया से होने वाली लगभग 400,000 मौतों को संभावित रूप से रोक सकता है। इसके अलावा 1.4 करोड़ लोगों को पानी से होने वाली बीमारियों से बचाया जा सकता है। आपको बता दें कि केंद्र सरकार के जल जीवन मिशन के तहत 2024 तक भारत के ग्रामीण परिवारों तक नल से जल पहुंचाना है। अब तक 62.84% इलाकों में यह काम पूरा हो चुका है। राष्ट्रीय सैंपल सर्वेक्षण संगठन के सर्वेक्षण के अनुसार, झारखंड में महिलाओं को पानी के लिए हर दिन 40 मिनट पैदल चलना पड़ता है। वहीं, बिहार में यह समय करीब 33 मिनट है। ग्रामीण महाराष्ट्र में यह औसत करीब 24 मिनट है। 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस योजना की शुरुआत की थी।

कांग्रेस का होगा कायापलट, प्रियंका को कमान!

कांग्रेस कायापलट के लिए तैयार है। खबर है कि 2024 लोकसभा चुनाव से पहले की शीर्ष समिति कांग्रेस वर्किंग कमेटी से लेकर कई प्रदेश अध्यक्षों तक में बदलाव की तैयारी है। इसके अलावा संभावनाएं है कि कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा को उत्तर प्रदेश ब बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। 2023 में राजस्थान, मध्य प्रदेश, तेलंगाना और छत्तीसगढ़ में चुनाव और पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव होने हैं। कहा जा रहा है कि कांग्रेस में बड़े स्तर पर बदलाव की तैयारियां जारी हैं। एक मीडिया रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले बताया गया है कि तमिलनाडु, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र और झारखंड को जल्द ही नए प्रदेश अध्यक्ष मिलने वाले हैं। इसके अलावा गुजरात, ओडिशा, पुडुचेरी, बिहार, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और झारखंड में पार्टी प्रभारियों में भी बदलाव कर सकती है।

रिपोर्ट के अनुसार, सूत्रों ने बताया है कि राजस्थान में जल्दी नए कांग्रेस समिति गठित हो सकती है। दरअसल, राज्य में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट के बीच जारी तकरार पर स्थिति साफ नहीं हो पाई है। अटकलें लग रही हैं कि पायलट जल्दी अपनी नई पार्टी का ऐलान कर सकते हैं, लेकिन कांग्रेस के वरिष्ठ नेता इस बात से इनकार कर रहे हैं।

साल अक्टूबर में हुए कांग्रेस अध्यक्ष चुनाव के बाद से ही कांग्रेस में वर्किंग कमिटी में बदलाव की अटकलें हैं। अब कहा जा रहा है कि समिति को लेकर भी पार्टी जल्दी बड़ी घोषणा करेगी। संगठन में बदलाव की प्रक्रिया कुछ हफ्तों में पूरी हो सकती है। इधर, कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में जीत के बाद पार्टी प्रियंका गांधी को भी बड़ी जिम्मेदारी देने की तैयारी कर रही है। 2024 लोकसभा चुनाव के लिए भी वह बड़े स्तर पर प्रचार करती नजर आएंगी।

■ निमिषा दीक्षित

ख़बर है कि चुनावी राज्य एमपी से प्रियंका गांधी प्रचार अभियान की शुरुआत कर सकती हैं। वह कल यानी 12 जून को जबलपुर पहुंच रही हैं। फिलहाल, प्रियंका उत्तर प्रदेश की प्रभारी हैं। पार्टी को यूपी विधानसभा चुनाव में भाजपा के हाथों करारी हार का सामना करना पड़ा था। कांग्रेस 399 सीटों पर मैदान में थी, लेकिन 2 ही सीटें जीत सकी थी। इतना ही नहीं पार्टी की 387 सीटों पर जमानत जब्त हो गई थी। पार्टी की इस हार के बाद से ही प्रियंका ने यूपी का दौरा नहीं किया है।

सादगी व सौम्यता की मिसाल रही हैं दूरदर्शन की महिला न्यूज रीडर्स, क्या आपको याद है इन सबके चेहरे?

■ आधी आबादी डेस्क

गीतांजलि अय्यर नहीं रहीं। दूरदर्शन पर अंग्रेजी में समाचार प्रस्तुत करने वाली भारत की पहली महिला प्रस्तोता गीतांजलि अय्यर का 7 जून 2023 को निधन हो गया। उनकी आयु 70 साल से अधिक थी। उन्हें अंग्रेजी के शुद्ध उच्चारण के चलते न्यूज रीडर के रूप में खूब ख्याति मिली। उन्होंने ही प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और उनसे पहले संजय गांधी के निधन के समाचार देश-दुनिया को दिए थे। आज गीतांजलि के बहाने हम आपको दूरदर्शन के सुनहरे दिनों की कुछ महिला एंकरों के बारे में बता रहे हैं।

वर्तमान समय में टीवी न्यूज का मतलब है चीखते-चिल्लाते पत्रकार, प्रतिभागियों के साथ पैनल चर्चा में एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप का दौर और एक असामान्य कोलाहल जिसमें सभी के बीच बोलने की होड़ लगी है। इस पूरे हंगामे के बीच एक दर्शक खुद को ठगा हुआ महसूस करता है।

लेकिन, जब हम अपने पुराने दिन याद करते हैं, तो पाते हैं कि जब टीवी, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया नहीं था तब हमारे अंदर देश और दुनिया की खबरों को जानने की किस कदर बेचैनी होती थी? ब्लैक एण्ड व्हाइट टीवी के जमाने से पहले जब रेडियो एकमात्र साधन हुआ करता था, तब लोग जिसे न देख सकते थे और न जानते थे बस उसकी आवाज के इंतज़ार में रहते थे और दिन में एक बार आने वाले न्यूज बुलेटिन का बेसब्री से इंतजार करते और तसल्ली से सुना करते थे।

फिर जब ब्लैक एंड व्हाइट टीवी आया और दूरदर्शन का दौर आया तब टीवी पर पुरुष और महिला एंकर खबर पढ़ते हुए दिखाई देने लगे। ये ऐसे एंकर थे जिनको पूरा देश सुनता था। इन्होंने अपने बोलने, पहनावे, और अपने बालों और मेकअप के तरीके से एक तरह का ट्रेंड सेट कर दिया था।

प्रतिमा पूरी

दूरदर्शन का जन्म 1959 में एक अस्थायी स्टूडियो में एक छोटे ट्रांसमीटर के साथ प्रायोगिक प्रसारण के रूप में हुआ था। छह साल बाद, भारत की पहली महिला समाचार प्रस्तुतकर्ता प्रतिमा पुरी ने पांच मिनट का समाचार बुलेटिन प्रस्तुत किया। पुरी, जिनका जन्म शिमला में विद्या रावत के रूप में हुआ था, ने दूरदर्शन में जाने से पहले ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) के साथ अपना करियर शुरू किया। बताया जाता है कि प्रतिमा ने शिमला में ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) स्टेशन से मीडिया में कदम रखा। पर बाद में उन्हें दिल्ली भेज दिया गया। देश का सबसे पहला न्यूज़ बुलेटिन पूरे पांच मिनट का था और इसे प्रस्तुत किया था प्रतिमा पुरी ने। उन्होंने दूरदर्शन में बहुत लंबे समय तक काम किया। बाद में वे न्यूज़रीडर बनने के इच्छुक लोगों को ट्रेनिंग भी देने लगी थीं। इतना ही नहीं उस समय में, वे महान हस्तियों का इंटरव्यू लेने के लिए भी

प्रतिमा पूरी

जानी जाती थीं। जिसमें रूस के युरी गगारिन का नाम भी शामिल है, जो अन्तरिक्ष में जाने वाले पहले व्यक्ति थे। 2017 में प्रतिमा पुरी का निधन हो गया।

सलमा सुल्तान

अब बात सलमा सुल्तान की। बदन पर साड़ी, बालों में उसी से मिलते-जुलते रंग का गुलाब और खबरें पढ़ने का अलग अंदाज, इन बातों की कल्पना की जाए तो एक ही चेहरा हमारे जेहन में आता है- सलमा सुलतान का। 16 मार्च 1947 को भोपाल में जन्मी सलमा सुल्तान ने दूरदर्शन में सन् 1967 से 1997 तक समाचार रीडर और एंकर की भूमिका इस तरह निभाई की आज भी उनका नाम लेते ही उनकी वही सौम्य छवि हम सभी की आंखों में उतर आती है। कई वर्षों तक दूरदर्शन का चेहरा रहीं सलमा सुल्तान ने सबसे पहले पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या की खबर 31 अक्टूबर, 1984 को उन्हें गोली मारने के 10 घंटे बाद ब्रेक की थी।

सलमा सुल्तान

बालों में गुलाब लगाना उन्हें बेहद पसंद था। दूरदर्शन से सेवानिवृत्त होने के बाद, सुल्तान ने अपने प्रोडक्शन हाउस, लेंसव्यू प्राइवेट लिमिटेड के तहत डीडी पर पंचतंत्र से, सुनो कहानी, स्वर मेरे तुम्हारे और जलते सवाल जैसे धारावाहिकों का निर्देशन किया।

नीति रविंद्रन

नीति रविंद्रन दूरदर्शन के फेमस ऐंकर्स में नीति रविंद्रन का नाम भी शामिल है। वो 1980 से 1990 तक दूरर्शन में काम करती थीं। अपनी मधुर आवाज से ये दर्शकों को बांधे रखती थीं। नीति अंग्रेजी में समाचार पढ़ती थी। इनका अंग्रेजी उच्चारण बेहद सटीक था। अपने शुद्ध उच्चारण के चलते ही नीति को उस समय की इलीट इंडिया क्लास में काफी पसंद किया जाने लगा था। रवींद्रन को 1984 में ऑपरेशन ब्लू स्टार के अपने कवरेज के लिए जाना जाता है।

नीलम शर्मा

दूरदर्शन के सबसे फेमस चेहरों में नीलम शर्मा का नाम भी शामिल है। उन्हें दूरदर्शन के संस्थापक एंकरों में से एक के रूप में जाना जाता था। उनकी सादगी और साड़ी पहनने के अंदाज को लाखों लोगों द्वारा पंसद किया जाता था। उन्हें देश में महिलाओं के लिए सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'नारी शक्ति सम्मान' से नवाजा गया था। वह एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माता भी थीं, जिनके नाम पर 60 से अधिक फिल्में थीं। उन्होंने 1995 में दूरदर्शन से अपने करियर की शुरुआत की और 20 वर्षों से चैनल के साथ जुड़ी रहीं। कैंसर के

नीलम शर्मा

कारण 50 साल की उम्र में 17 अगस्त 2019 को उनका निधन हो गया।

रिनी सिमोन

दूरदर्शन की एकंर रिनी सिमोन ने साल 1985 से लेकर 2001 तक डीडी के साथ काम किया था। उनकी एकरिंग और मधुर आवाज के आज भी लाखों प्रशंसक हैं। अब ये एक वॉइस ओवर आर्टिस्ट के तौर पर काम करती हैं। दिल्ली मेट्रो में अंग्रेजी में सुनाई देने वाला अनाउंसमेंट रिनी ने ही किया है।

सर्राफा बाज़ार

22 कैरेट सोना	चांदी
₹54,940	₹73,700
प्रति 10 ग्राम	प्रति किलो

आपको झकझोर के रख देंगे 'स्कूल ऑफ लाइज' के सीक्रेट्स

▪ आधी आबादी डेस्क

डिज्नी प्लस हॉटस्टार की नई वेब सीरीज स्कूल ऑफ लाइज एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दे को संबोधित करती है जिसे अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। शो का निर्देशन अविनाश अरुण ने किया है। अविनाश इससे पहले पाताल लोक का निर्देशन कर चुके हैं। स्कूल, कॉलेज और वहां रहने को लेकर ओटीटी स्पेस में कई शोज हैं, लेकिन उनमें से ज्यादातर पढ़ाई या हॉस्टल लाइफ के प्रेशर को मनोरंजक तरीके से पेश करते हैं। 'स्कूल ऑफ लाइज' एक बोर्डिंग स्कूल में रहने वाले बच्चों के जरिए कई सवाल खड़े करती है। जिस विद्यालय में जीवन के प्रारम्भिक वर्ष बीते हैं, वह जीवन की स्मृति बनेगा या त्रासदी, यह बहुत कुछ विद्यालय के वातावरण पर निर्भर करता है। बच्चे के साथी कौन हैं? शिक्षकों का व्यवहार कैसा है? माता-पिता से दूरी आपको भावनात्मक रूप से कितना कमजोर या मजबूत बनाती है? स्कूल ऑफ लाइज ऐसे सभी सवालों को अपने साथ ले जाता है।

यह शो डाल्टन के काल्पनिक पर्वतीय शहर में स्थित है, जहाँ रिवर इसाक स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, या RISE, एक बोर्डिंग स्कूल में कार्यक्रम होते हैं। 12 साल का बच्चा शक्ति सलगांवकर अचानक गायब हो जाता है। छात्रावास में उनका बिस्तर खाली है और कक्षा में उनकी बेंच। छात्रावास प्रभारी शिक्षिका अन्य बच्चों की मदद से उसे खोजने की कोशिश करती है, लेकिन जब वह नहीं मिलती है तो पुलिस को सूचित किया जाता है और मां को बुलाया जाता है। बच्चे को खोजने की प्रक्रिया में कहानी आगे बढ़ती है और यह सवाल बना रहता है कि शक्ति का क्या हुआ? क्या वह खुद भाग गया है या किसी ने उसका अपहरण कर लिया है? इससे सभी प्रमुख पात्र और उनके रहस्य एक-एक करके खुलते हैं।

हर कोई किसी न किसी समस्या से घिरा हुआ है। शो के अंत में एक कड़वी सच्चाई सामने आती है जो चौंकाने वाली है। आठ एपिसोड की सीरीज 'स्कूल ऑफ लाइज' का स्क्रीनप्ले इस तरह से लिखा गया है कि पहले एपिसोड में लगभग सभी प्रमुख किरदारों को दिखाया जाता है और फिर

बाद के एपिसोड में इन किरदारों की परतें खुलती हैं। पात्रों के व्यक्तिगत संघर्ष श्रृंखला के रहस्य को बनाए रखने में योगदान करते हैं। झूठ का स्कूल देखना बोर्डिंग स्कूल में रहने वाले बच्चों के मानस से जुड़ता है। उनका अकेलापन, उनकी समस्याएं, उनका भावनात्मक संघर्ष विचारोत्तेजक है। यौवन की दहलीज पर खड़े किशोरों का संघर्ष भी उन्हें जोड़े रखता है। कुछ दृश्य दिल दहला देने वाले हैं।

स्कूल की करियर काउंसलर के रूप में निम्रत कौर और टीचर सैम के रूप में आमिर बशीर ने शो के मूड और सस्पेंस को बनाए रखा है। इन दोनों अभिनेताओं को परफॉर्म करते देखना एक खुशी की बात है। वरिन रूपाणी, वीर पचीसिया और आर्यन सिंह अहलावत ने बराबर का सहयोग दिया है। स्कूल ऑफ़ लाइज़ एक अच्छी तरह से तैयार की गई सस्पेंस-थ्रिलर श्रृंखला है जो मानव स्वभाव के माध्यम से रहस्य को गहराती है। हालाँकि, यह धीरे-धीरे गति पकड़ता है। कहानी और किरदारों को आत्मसात करने के लिए कुछ समय देना होगा।

साहित्य

पुस्तक समीक्षा: रुदादे सफर... यानी सफर पिता पुत्री के रुहानी रिश्ते का!

कथाकार पंकज सुबीर का हालिया उपन्यास 'रुदादे सफर' कुछ मायनों में अनोखा है। दरअसल, यह सफर वृत्तांत है एक डॉक्टर बाप-बेटी के रिश्तों का जो एक दूसरे के साथ, एक दूसरे के लिए जिंदगी बिताना चाहते हैं, मगर मिलना-बिछड़ना जिंदगी है सो इसी मिलने-बिछड़ने को पंकज ने अपने कोमल अंदाज में ऐसे पिरोया है कि पहले पन्ने से आखिर तक पढ़ने के बाद भी अहसास ही नहीं होता कि दो सौ से ज्यादा पन्नों का उपन्यास खत्म भी हो गया। यह कहानी भोपाल के गांधी मेडिकल कॉलेज से शुरू होकर उसी में ही खत्म होती है। एक परिवार है, जिसमें डॉक्टर पिता, बेटी और पत्नी हैं। ये डॉक्टर भी ऐसे कि जिनको पैसा कमाना पसंद नहीं। जैसा कि ऐसे में होता है कि ऐसे पति, पत्नी को कम पसंद आते हैं, पति-पत्नी की खटर-पटर के बीच बाप-बेटी के रिश्ते प्रगाढ़ होते हैं और बेटी भी अपने पिता जैसा ही बनती है। ऐसा डॉक्टर जो डॉक्टर पढ़ाए मगर पैसा न कमाए। पिता-पुत्री के एक दूसरे के प्रति स्नेह, एक

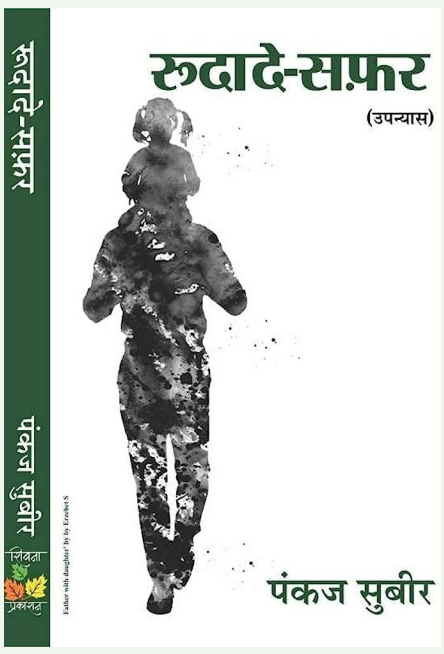

दूसरे की पसंद और प्रगाढ़ता के बीच नए तरीके से उपन्यास में लेखक ने प्रकाश डाला है।

लेखक ने महिला डॉक्टर के बहाने मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी डिपार्टमेंट और डेड बॉडी 'जिसे कैडेवर कहते हैं' की कमी और देहदान के संकल्प को लेकर जागरूकता फैलाने की कोशिश भी की है, जो आमतौर पर अब उपन्यासों में ऐसा देखने को नहीं मिलता। यह उपन्यास पूरी तरह से महिला केंद्रित है। एक काबिल महिला डॉक्टर के अकेलेपन को गजलों की लाइनों के बीच ऐसा बांधा है कि बहुत ज्यादा कुछ कहना ही नहीं पड़ता और यही इस उपन्यास की बड़ी खासियत है कि बहुत कुछ जो लिखा नहीं गया वो भी पाठक पढ़ लेता है।

पुस्तक: रुदादे सफर
लेखक: पंकज सुबीर
मूल्य: 300 रुपये
प्रकाशक: शिवना प्रकाशन

प्रबंध संपादक: दिनेश के सिंह ❁ संपादक: हीरेन्द्र झा-निमिषा दीक्षित ❁ सलाहकार संपादक: चारुल मल्लिक, राजेश शर्मा, गीता सिंह ❁ डिज़ाइनर: मो. हसमतुल्लाह अंसारी

RNI-DELHIN/2013/51353